मुण्डकोपनिषद् से एक श्लोक

सत्यतः, यह प्राण ही है जो सर्व प्राणियों में व्याप्त है।
यह जानते हुए, प्रज्ञावान मनुष्य और किसी भी चीज़ के विषय में बात नहीं करता।
आत्मा में विलास करने वाला, आत्मा में आनन्द लेने वाला और कर्म करने वाला —
ऐसा व्यक्ति ब्रह्मज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ है।

मुण्डकोपनिषद् ३.१.४; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।